पाठ-11

प्रकृति का संदेश

हम प्रकृति की हर वस्तु से कोई न कोई संदेश प्राप्त करते हैं। प्राकृतिक वस्तुएँ हमें धैर्य, साहस, कर्तव्य, सेवा-भावना तथा उन्नति का पाठ पढ़ाती हैं। प्रस्तुत कविता हमें क्या-क्या सीख देती हैं, आओ जानें!

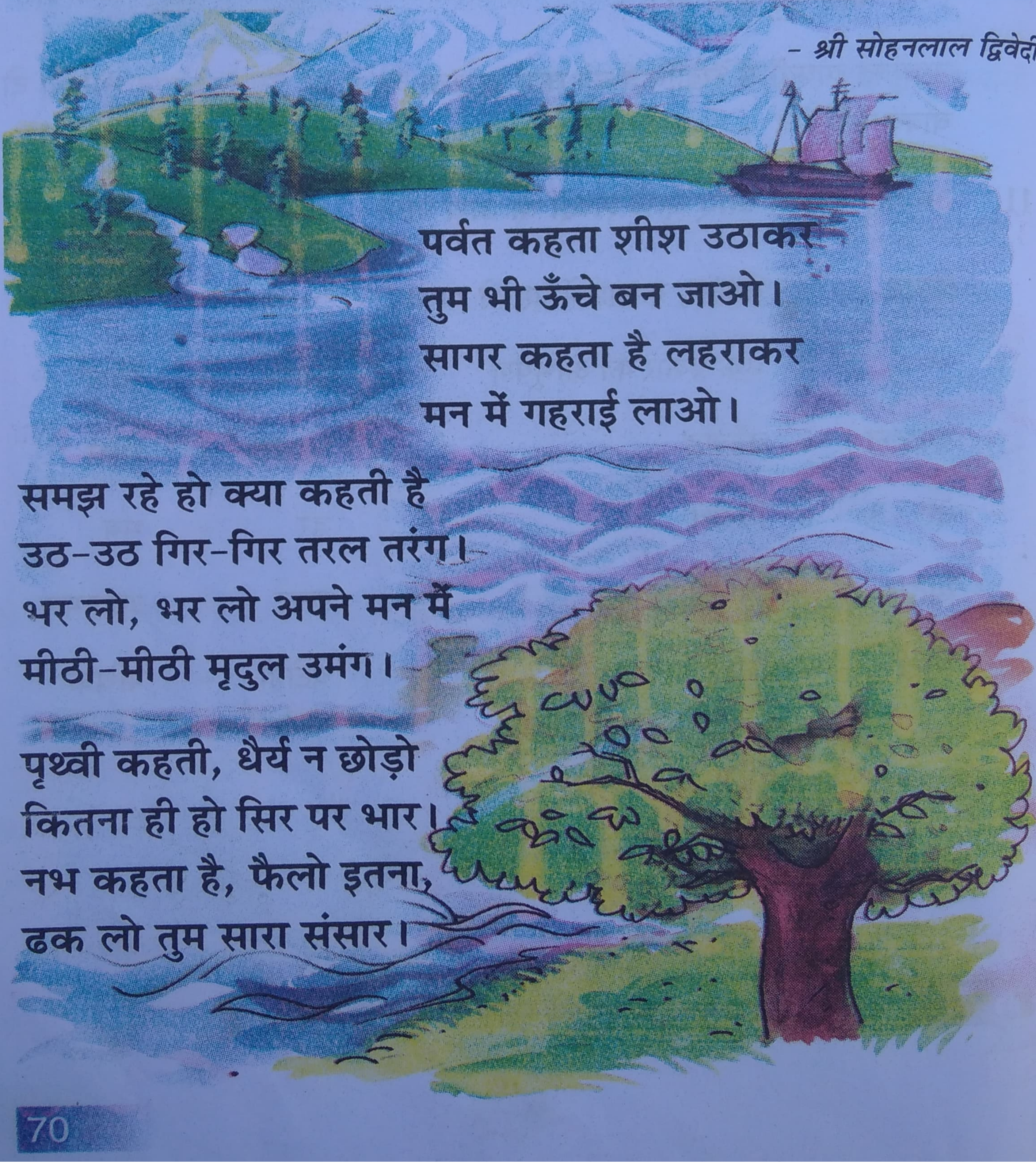

– श्री सोहनलाल द्विवेदी

पर्वत कहता शीश उठाकर
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर
मन में गहराई लाओ।

समझ रहे हो क्या कहती है
उठ-उठ गिर-गिर तरल तरंग।
भर लो, भर लो अपने मन में
मीठी-मीठी मृदुल उमंग।

पृथ्वी कहती, धैर्य न छोड़ो
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है, फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा संसार।

अभ्यास-माला

1. कविता का हाव-भाव के साथ वाचन करो।

2. आओ, ऐसे ही एक अन्य कविता की कुछ पंक्तियाँ दोहराएँ :

देखो कोयल काली है पर
मीठी है इसकी बोली
इसने तो कूक-कूक कर
आमों में मिसरी घोली।

3. खाली जगहों की पूर्ति करो :

(क) पर्वत कहता .... उठाकर
तुम भी .... बन जाओ।
.... कहता है लहराकर
मन में .... लाओ।

(ख) पृथ्वी कहती, ... न छोड़ो
कितना ही हो .... पर भार।
.... कहता है, फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा ....।

4. कविता का भाव समझो और उत्तर दो :

(क) ऊँचाइयों को छूने का संदेश कौन देता है?

(ख) मन में गंभीरता लाने का संदेश कौन देता है?

(ग) धीरज रखने का संदेश कौन देती है?

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो :

(क) 'प्रकृति का संदेश' कविता के कवि कौन हैं?

(ख) तरंग हमें क्या संदेश देती है?

(ग) पाठ के आधार पर प्रकृति के चार उपादानों के नाम लिखो।

(घ) आकाश हमें क्या संदेश देता है?

6. आओ, बातचीत करें :

प्रकृति और प्राणियों में गहरा संबंध है। पृथ्वी पर जीवन-धारण के लिए प्रकृति ने सभी प्राणियों को हवा-पानी, वन-पर्वत, पेड़-पौधे आदि दिए हैं। परंतु आज मनुष्य प्रकृति के इन उपादानों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान नहीं देता। फलस्वरूप हमारा पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है।

⇒ *'प्रकृति की सुरक्षा और हमारा कर्तव्य' विषय पर कक्षा के सभी विद्यार्थी सम्मिलित होकर परिचर्चा का आयोजन करो साथ ही अपने-अपने विचार शिक्षक को बताओ।*

7. पढ़ो, समझो और लिखो :

बालक	बालिका	बाघ	बाघिन
गायक	....	माली	....
पाठक	....	तेली	....
नायक	....	धोबी	....

8. आओ, रेखा खींचकर समानार्थक शब्दों को मिलाएँ :

पर्वत	धरती
शीश	कोमल
नभ	आकाश
मृदुल	गिरि
पृथ्वी	सिर

9. आओ, पढ़ें और समझें :

(क) मोहन की पुस्तक अच्छी है। (ख) जंगल में शेर और हाथी रहते हैं।

(ग) लड़का मीठा आम खा रहा है। (घ) रजिया स्कूल जा रही है।

ऊपर के वाक्यों में रेखांकित शब्द नाम सूचित करते हैं। ये सभी **संज्ञा** शब्द हैं।

⇒ **ऐसे और पाँच संज्ञा शब्द लिखो :**

....

....

10. आओ, जानें :

महात्मा गाँधी को भाषण देने के लिए जाना था। उनके लिए ताँगा आने वाला था। वे बार-बार घड़ी देख रहे थे। अचानक उन्होंने पास खड़े आश्रमवासी से कहा, "भाई, मेरे लिए जल्दी से एक साइकिल मँगा दीजिए।"

इन वाक्यों में संज्ञा शब्द (महात्मा गाँधी) के स्थान पर उनके, वे, उन्होंने, मेरे-जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है। ये शब्द **सर्वनाम** कहलाते हैं। इनके अलावा मैं, हम, आप, यह, वह, क्या, कौन, कब, कोई आदि सर्वनामों के उदाहरण हैं।

कविता में आए निम्नलिखित सर्वनामों से एक-एक वाक्य बनाओ :

(क) तुम : ....

(ख) अपना : ....

11. आओ, पहेलियाँ समझें और उत्तर लिखें :

(क) ऊँट की बैठक, हिरन की चाल
वह कौन-सा जानवर, जिसके दुम न बाल?

अब तुम सोचकर बताओ?

(ख) किसकी आँखें होती हैं, पर देख नहीं सकता?

(ग) वह कौन है, जिसका मुँह नहीं, पर बोलता है?

(घ) किसके पैर नहीं होते, पर चलता है?

12. आओ, यह भी करें :

(क) अपने आस-पास की प्रकृति का निरीक्षण करके अपना अनुभव कक्षा में सुनाओ।

(ख) प्रकृति पर आधारित चार पंक्तियों की एक कविता लिखने का प्रयास करो।

(ग) प्रकृति विषयक अन्य कविताओं का संग्रह कर कक्षा में सुनाओ।

13. आओ, खेल-खेल में सीखें :

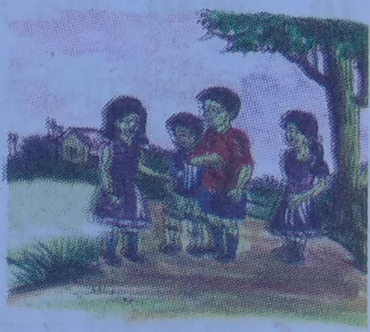

कलम

मकान

नल

लड़का

कागज

....

....

....

....

....

14. 'है' अथवा 'हैं' लगाकर वाक्यों को पूरा करो :

यह पेड़ .... ।	वे पेड़ .... ।
यह लड़का .... ।	ये लड़के .... ।
वह पक्षी .... ।	वे पक्षी .... ।
वह घोड़ा .... ।	वे घोड़े .... ।

15. आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शीश	=	सिर	मृदुल	=	कोमल
गहराई	=	गंभीरता	उमंग	=	उत्साह
तरंग	=	लहर	धैर्य	=	धीरज